Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **2**

APP–1008

M.A. (Previous) Examination, 2022

RAJASTHANI

Paper - IV

(राजस्थानी लोक साहित्य, संस्कृति एवं संत साहित्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

(सगळा सवालां रा पडूत्तर राजस्थानी में ई देवणा है)

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सगळा **दस** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरैक सवाल वास्ते 2 अंक अर् **50** सबदां मांय देवणां है।

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात सवालां मांय सू किणी **पांच** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरैक सवाल वास्ते **200** सबद अर् **8** अंक राखीज्या है।

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार सवालां मांय सू कोई **दोय** सवालां रा पडूत्तर दिरावो। हरैक सवाल वास्ते **500** सबद अर् **20** अंक राखीज्या है।

खण्ड–अ

1. सगळा सवालां रा जवाब देवणा है। (सबद सीमा **50** सबद) :

   (i) लोक साहित्य री परिभाषा स्पष्ट करो।

   (ii) ''लोकगीत प्रकृति रा सांचा उद्‌गार है।'' उपरोक्त परिभाषा किण विद्वान री है ?

(iii) लोकगाथा रौ दूजो नांव कांई है ?

(iv) राजस्थानी री कोई दोय वीरता प्रधान लोककथावां रौ नांव दरसावो।

(v) 'कामण रा गीत' किण अवसर माथै गाया जावै है ?

(vi) किण लोक देवता री पङ सबसूं लम्बी मानीजै है ?

(vii) आई माता रौ थान किण नांव सूं ओळखीजै है ?

(viii) रामदेवजी नै किण पंथ री थरपणा करी ही।

(ix) जसनाथी पंथ री प्रमुख पीठ कठै मानीजै।

(x) रामस्नेही संप्रदाय री प्रमुख साखावां रा नांव बतावो।

खण्ड–ब

नोट :– इण खण्ड सूं किणी **पाँच** सवालां रौ पङूत्तर देणो है। (सबद सीमा **200** सबद)।

2. लोक साहित्य अर अभिजात्य साहित्य मांय कांई अंतर है ?

3. लोक मानस नै समझावतां थकां लोक तत्त्व री विवेचना करो।

4. राजस्थानी तीज–त्योहारां सूं सम्बन्धी लोकगीतां री विरोळ करो।

5. 'निहालदे सुलतान' लोकगाथा रौ कथासार आपरै सबदां में उजागर करो।

6. 'ढोला मारु' री लोक कथा रौ सार उजागर करो।

7. बाबा रामदेवजी रौ लोक समाज में योगदान नै स्पष्ट करो।

8. जाम्भोजी बिश्नोई संप्रदाय री प्रमुख शिक्षावां री विरोळ करो।

खण्ड–स

नोट :– इण खण्ड सूं किणी **दोय** सवालां रौ पङूत्तर देणो है। (सबद सीमा **500** सबद)।

9. लोक साहित्य रा सामान्य सिद्धान्तां री व्याख्या करो।

10. लोक साहित्य री परिभाषा देवता थकां इणरी प्रमुख विसेसतावां नै उजागर करो।

11. राजस्थनी लोकगाथा री परिभाषा देवता थकां इणरौ वरगीकरण नै दरसावो।

12. राजस्थानी संत सम्प्रदायां रौ लोक समाज में दिये गये योगदान नै स्पस्ट करो।